बौद्धिक सम्पदा से विकास

(विश्वविख्यात नोबेल पुरस्कार सर अल्फ्रेड नोबेल को डाइनामाइट के (एकस्व) पेटेन्ट के माध्यम से प्राप्त धनराशि में से ही दिए जाते हैं। प्रति वर्ष 26 अप्रैल का दिन संयुक्त राष्ट्र संगठन के जेनेवा स्थित विश्व बौद्धिक सम्पदा संगठन (WIPO) का स्थापना दिवस पूरे विश्व में विश्व बौद्धिक सम्पदा दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस अवसर पर यह लेख प्रस्तुत है।)

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में प्रगति करते रहना ही नए युग का धर्म एवं विकास का मूल मंत्र है। किसी भी देश में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की बौद्धिक सम्पदा ही उस देश के भौतिक विकास तथा समृद्धि का मूल स्रोत होती है। विकसित राष्ट्रों की सफलता का रहस्य उनका वैज्ञानिक अनुसंधान एवं प्रौद्योगिकी के नवनिर्माण में है। मानव का जीवनस्तर ऊँचा उठाने हेतु उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों के प्रयोग में प्रौद्योगिकी की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।

बौद्धिक सम्पदा/स्वामित्व अधिकार विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विकास का महत्त्वपूर्ण मानदण्ड है। आज की ज्ञानाधारित उद्योग-अर्थव्यवस्था में इस संसाधन को असाधारण महत्त्व प्राप्त है। ज्ञान नयी अर्थव्यवस्था का प्रचलित सिक्का है। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का विकास और बौद्धिक सम्पदा इस सिक्के के दो पहलू हैं।

इसीलिए बौद्धिक सम्पदा को IP is New Wealth of Nation कहा जाता है। यहाँ पर यह ध्यान देने की बात है कि मौलिक विज्ञान का पथदर्शक अनुसंधान ही वर्तमान एवं प्रौद्योगिकी के निर्माण और विकास का मार्गदर्शक होता है।

Intellectual property Rights अर्थात बौद्धिक सम्पदा अधिकार नामक संकल्पना में एकस्व (पेटेण्ट) प्रकाशनाधिकार (कॉपीराइट), व्यापारिक चिह्न (ट्रेडमार्क), अभिकल्पना (डिज़ाइन), डोमेन नेम, भौगोलिक संकेत आदि आते हैं। एकस्व बौद्धिक सम्पदा अधिकार का बहुत ही महत्त्वपूर्ण घटक माना जाता है। एकस्व क्या होता है? एकस्व आविष्कार का एक घटक होता है जो आर्थिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण ऐसे औद्योगिक अनुप्रयोगयोग्य प्रौद्योगिकी के विकास में योगदान देता है (patent is inventiveness leading to technological advance capable of industrial application which has economic significance) इस प्रकार के प्रौद्योगिकी के नवनिर्माण /उसके अनुप्रयोग के अधिकार सम्बन्धित संस्था द्वारा वैज्ञानिक/शोधकर्ता को सामान्यत: 20 वर्षो के लिए प्रदान किए जाते हैं। केवल संकल्पना के लिए एकस्व प्राप्त नहीं होता है बल्कि उस पर आधारित प्रौद्योगिकी की उपयोगिता को भी सिद्ध करना होता है।

एकस्व (पेटेण्ट) का इतिहास बहुत पुराना है। इ.स. 1417 में वेनिस के एक व्यावसायिक को काँच के उपयोग के सन्दर्भ में एकस्व का अधिकार मिलने का उल्लेख है। शोधकर्ता को उसके अनुसंधान कार्य का श्रेय प्राप्त हो तथा नवनिर्माण एवं विकास को गति प्राप्त हो यही इसका मूल उद्देश्य है। तत्पश्चात 16-17 वीं सदी की औद्योगिक क्रान्ति का काल एकस्व अधिकार की संस्था के आरम्भ एवं विकास का काल माना जाएगा। इससे सम्बन्धित एक रोचक घटना यह है कि वर्ष 1898 में तत्कालीन अमेरिकन एकस्व कार्यालय के प्रमुख, बेंजामिन बटवर्थ ने कहा था कि अब आविष्कार के लिए कुछ बाकी नहीं रहा है। (उस समय भौतिक एवं रसायनविज्ञान परिपूर्ण हो गए हैं और सब कुछ खोज लिया गया है ऐसी जनसामान्य एवं अन्य सभी लोगों की धारणा थी, क्योंकि उस समय की परिस्थिति भी कुछ ऐसी ही थी) किन्तु वास्तविक रूप से देखा जाए तो उसके बाद ही 20 वीं सदी में मानव जीवन में आमूलचूल परिवर्तन लाने वाले कई आविष्कार किए गए और अब भी किए जा रहे हैं - जैसे हवाईजहाज, विकिरण, परमाणु पृथक्करण, प्रतिजैविक, डीएनए, सापेक्षतावाद, विश्व का प्रसरण, कम्प्यूटर आदि) इस प्रकार विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी एक निरन्तर रूप से चलने वाली प्रक्रिया है। इस कारण एकस्व की संस्था का महत्त्व बढ़ता गया और आज एकस्व अधिकार वैश्विक उद्योग-व्यापार का केन्द्रबिन्दु बन गया है। इसे हम व्यापार से सम्बद्ध बौद्धिक सम्पदा (Trade Related

डॉ. अशोक गिरी, वैज्ञानिक, एन.सी.एल.,पुणे, एवं **डॉ. निलेश बनसोड़े,** शिवाजी विश्वविद्यालय,कोल्हापूर

Intellectual Properties - TRIPS) के रूप में जानते हैं। आज ट्रिप्स विश्व व्यापार संगठन (WTO) के ध्येय एवं नीतियों का एक महत्त्वपूर्ण घटक बन गया है।

हमारे दैनंदिन जीवन में बौद्धिक स्वामित्व अधिकार के कई उदाहरण दिखाई देते हैं। हम जिन वस्तुओं का प्रयोग करते हैं उनके कई एकस्व अधिकार,प्रकाशनाधिकार.व्यापारिक चिह्न होते हैं। साधारण पेन की निर्माण प्रक्रिया में 1800 से अधिक एकस्व हैं। (विश्वप्रसिद्ध पार्कर पेन के संस्थापक पार्कर मूल रूप से पेन की दुरुस्ती का काम करते थे किन्तु वे उत्कृष्टता को महत्त्व देते थे) इनमें से स्याही के सन्दर्भ में 971, पेन की रिफील के विषय में 120, पेन के आकार के बारे में 535, पेन से किस प्रकार लिखा जाता है, इस सम्बन्ध में 162 तथा पेन के नाम और उनके ढक्कनों की अभिकल्पना आदि के बारे में कई एकस्व बनाए गए हैं। रेनॉल्ड पेन के विज्ञापन की **लिखते लिखते लव हो जाए** यह कैचलाइन भी प्रकाशनाधिकार (कॉपीराइट) का ही एक हिस्सा है। आज हमारे द्वारा किए जाने वाले प्रत्येक एसएमएस के शुल्क का कुछ अंश रॉयल्टी के रूप में अमेरिका के टेक्सास विश्वविद्यालय को जाता है। पूर्व में औषधियों की दुकानों पर दिखाई देने वाले लाल रंग के क्रॉस चिह्न आज अधिकाँशत: नदारद हो गए हैं। क्योंकि यह चिह्न अन्तर्राष्ट्रीय रेड क्रॉस संगठन का बोधचिह्न है। कविवर ग्रेस (मूल नाम माणिक गोडघाटे) इनग्रीड बर्गमन को बहुत चाहते थे। उसकी एक फिल्म में उसे दिए गए ग्रेस नाम के अपने निजी प्रयोग हेतु उन्होंने उसकी (इनग्रीड) विशेष अनुमति ली थी। लिटिल हार्ट नामक बिस्किट का विशिष्ट आकार एवं मर्सिडीज कार पर लगी हुई तीन कोर वाली चाँदनी भी इसीके उदाहरण हैं। थ्री इडियट्स फिल्म में रांचो (फुनसुक वांगडू) नामक चरित्र दिखाया गया है जिसके नाम पर कई एकस्व अधिकार (पेटेण्टस् राइट्स) दर्ज हैं।

आज की वैश्विकरण की अर्थव्यवस्था में पेटेण्ट अधिकार एवं नवोन्मेष (इनोवेशन्स) (अर्थात अभिनव कल्पना, आविष्कार, प्रक्रिया, सेवा, वस्तु/कला का निर्माण आदि को नवनिर्माण क्षमता कहते हैं। इसे सृजनशीलता भी कहते हैं) बहुत आवश्यक हैं। इस सम्बन्ध में विश्वस्तर पर विचार करने पर प्रति व्यक्ति पेटेण्ट संख्या के मामले में इस्राएल, जो बहुत ही छोटा एवं नया राष्ट्र है, पहले नंबर पर है। इसी प्रकार मोस्ट इनोवेटिव नेशन्स की 120 देशों की सूची में स्विट्जरलैण्ड प्रथम स्थान पर है। इस सूची में भारत 62 वें स्थान पर है। हमारे देश में लगभग 250 उत्कृष्ट अनुसंधान संस्थान एवं लगभग 500 विश्वविद्यालय हैं। इस देश की उच्च शिक्षा प्रणाली विश्व में दूसरे नंबर की मानी जाती है। उच्च विद्याविभूषित मानव संसाधन के निर्माण (पीएच.डी.) में हम तीसरे नंबर पर हैं। इसके अलावा पारंपरिक ज्ञान की उत्कृष्ट परम्परा भी है। यह सब होते हुए भी अत्याधिक नवोन्मेषी राष्ट्रों (मोस्ट इनोवेटिव नेशन्स) की सूची में हम 62 वें स्थान पर ही संतुष्ट क्यों हैं? यहाँ (हमारे देश में) स्पिन ऑफ अथवा स्टार्ट अप का प्रमाण बहुत कम है। शिक्षा अथवा अनुसंधान संस्थानों द्वारा अनुसंधान के आधार पर विभिन्न वस्तुओं/सेवा की आपूर्ति हेतु भारत सरकार को एकस्व अधिकारी /एग्जामिनर की नियुक्ति हेतु (अल्प प्रतिसाद के कारण) पुन: विज्ञापन देना पड़ा था। अत: हमें सर्वप्रथम हमारे अज्ञान एवं उदासीनता के एकस्व को फेंक देना होगा।

बौद्धिक सम्पदा (आई. पी.) के विषय को भारतीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी से सम्बधित नीति निर्माण में हमेशा ही अनदेखा किया गया है अथवा समय के अनुरूप उसे उतना महत्त्व प्राप्त नहीं हुआ है। सीएसआईआर के तत्त्कालीन महानिदेशक, डॉ. माशेलकर ने अमरीका के विरुद्ध हल्दी एवं नीम की लड़ाई जीतने के बाद इस सम्बन्ध में हमारे देश में पोषक वातावरण का निर्माण हुआ था और लोगों में जागरूकता भी आयी है। सीएसआईआर के अधीन निस्केअर नामक संस्था IJPR के माध्यम से वर्तमान में मौलिक कार्य कर रही । तत्पश्चात सीएसआईआर ने संपादित किए हुए पारंपारिक ज्ञान का भण्डार नामक उपक्रम का इस सन्दर्भ में बड़ा महत्त्व है। इस अनमोल सम्पदा और बहुमोल जैवविविधता एवं आयुर्वेद तथा आदिवासियों को ज्ञात स्वास्थविषयक ज्ञान की वैज्ञानिक पद्धति से उपयोगिता सिद्ध की जाए तो ये बातें हमारे लिए एकस्व के सन्दर्भ में सोने की खानें बन सकती हैं। इनका मूल्य सोने से कम नहीं है। इसीलिए शायद विश्व बौद्धिक सम्पदा संगठन ने बौद्धिक सम्पदा के डेटाबेस का नाम WIPO-GOLD रखा है।

नवनिर्माण/सृजनशीलता (इनोवेशन्स) को गति प्रदान करने हेतु भारत सरकार ने 2010-2020 को नवोन्मेष दशक

(इनोवेशन डिकेड) घोषित किया है। अत: शीघ्र ही पूरे देश में 14 नए नवोन्मेष विश्वविद्यालय स्थापित करने की सरकार की नीति है, किन्तु ये विश्वविद्यालय स्पिनवर्सिटीज -स्पिन (Spinoffs) निर्माण करने वाली यूनिवर्सिटीज के रूप में विकसित होने चाहिए। इसके अलावा TIFAC ने बौध्दिक सम्पदा (IP) के सन्दर्भ में शुरू किया हुआ महिला वैज्ञानिक योजना का उपक्रम भी प्रशंसनीय है। केन्द्र सरकार का नागपुर स्थित राष्ट्रीय बौद्धिक सम्पदा प्रबन्धन संस्थान विभिन्न उपक्रमों के द्वारा से सम्बन्धित ज्ञान के प्रचार-प्रसार का कार्य कर रहा है। एनसीएल इनोवेशन पार्क स्थित IPFACE (ipface.org) नामक संस्था विविध योजनाओं/उपक्रमों के माध्यम से नए ज्ञानाधारित उद्योजक निर्माण करने में अग्रणी है। Patinformatics नामक नए उभरते हुए क्षेत्र में भी मानव संसाधन के विकास की आवश्यकता है। साथ ही नवोन्मेष एवं बौद्धिक सम्पदा इन दोनो विषयों को हाइस्कूल के पाठ्यक्रम में शामिल करने की आवश्यकता है। भारत के प्रत्येक अनुसंधान संस्थान में प्रत्येक मास में एक विशिष्ट दिन बौद्धिक सम्पदा दिवस के रूप में मनाते हुए इसका ज्ञान अधिकाधिक लोगों तक पहुँचाने के प्रयास भी किए जाने चाहिए।

इस प्रकार सार रूप में हम कह सकते हैं कि बौद्धिक सम्पदा में ज्ञानाधारित उद्योगव्यवस्था (सेवा/वस्तु) के माध्यम से सम्पदा का निर्माण करके सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तन लाने का सामर्थ्य है। यदि हमें विश्व में महासत्ता के रूप में उभरना है तो हमें विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सतत रूप से विकास करते हुए आगे बढ़ते रहना होगा। इस दृष्टि से पेटेण्ट का बड़ा महत्त्व है। वर्तमान दशक बौद्धिक सम्पदा(आईपी) दशक के रूप में मनाया जा रहा है। इस बात को ध्यान में रखते हुए नवोन्मेष (इनोवेशन) को अपना ध्येय बनाकर इस दिशा में प्रयास करते रहें तो आगामी वर्षों में हम विजेता होंगे इसमें सन्देह नहीं।